लघु पाराषरी

सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः षुभ फल प्रदाः।।

त्रिकोणेष हमेषा षुभ होते है। और वे है,9 5

त्रिषडाय स्थान– 3,6,11 पापिग्रह होते है।

केन्द्र स्थान –4,7,10

अष्टमेश कभी भी शुभ नही होता ,व्रहस्पति और षुक्र हमेषा षुभ होने के कारण केन्द्रेष होने का दोश होता है ।

मारकत्व र्निणय – 2,7 मे से7 भाव जादा मारकेश होता है ।

त्रिकोणेष का केन्द्रेष से सम्वन्ध राज योग होता है, और उनकी कोइ राशी अश्टम या एकादष भाव मे होने से राज भंग योग हो जाता है।।

अष्टम भी मारकेष होता है,

जन्म समय पिता घर मे थे या नही

चन्द्र लग्न को ना देखता हो या वुध शुक्र के वीच मे वैठा हो, अथवा मंगल ही सातवे स्थान मे वैठा हो एवं लग्न मे शनि वैठा हो पिता की अनुपस्थिति मे वालक का जन्म होता है,

फलित ज्योतिष

- जव चन्द्र और मंगल कि पूर्ण दृष्टी होति है तभी स्त्री को रजो धर्म होता है, स्त्री के जन्म राशी से 1,2,4,5,7,8,9,12 वां चन्द्र हो तो एवं गोचर मंगल कि पूर्ण दृष्टी हो चन्द्र पर तो रजो धर्म होता है ।
- गर्भ धारण समय – जव गुरू पुरूष या स्त्री के कुण्डली से लग्न से 1,5,9,11 भाव मे गोचर वस आये तव गर्भ धारण होति है।गर्भ धारण समय 5, भाव मे राहु केतु हो तो गर्भ पात निश्चत होति है यदि जन्म लग्न से 2,5,9 भाव मे गुरू या गुरू से पंचम स्थान मे पुर्ण बलवान ग्रह होतो उफम सन्तान योग होता है
- यदि पंचम भाव मे स्त्री कारक ग्रह हो या उनकी प्रवलता होतो तो अवश्य ही कन्या होति है ।
- यदि दूसरा स्थान प्रवल हो या छठे स्थान का स्वामि दूसरे भाव मे होतो वह गोद जाता है।
- यदि नैर्सगिक रूप से कोइ पापी ग्रह हो तो पर वह शुभ भाव का स्वामि होतो वह अपनी दशा मे शुभ फलही देता है,
- और कोइ शुभ ग्रह अगर अशुभभाव मे बैठा है तो अशुभ फल ही देगा।
- त्रिकोण का स्वामि हमेशा शुभ फल ही देता है चाहे वह अशुभ ही क्यो ना हो।
- कोइ भी ग्रह क्यो ना हो मगर 3,6,11 भाव का मालिक होने से पापी ही होता है।
- राहू कि कन्या राशी और ,मिथुन उच्च राशी मानी जाति है।
- छठे भाव का स्वामि अगर छठे भाव मे ही उपस्थित हो तो वह अत्यन्त साहसी और शत्रुयो पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाला होता है।
- केन्द्रो मे दशम भाव का स्वामि या दशम भाव बलवान माना जाता है
- इसी प्रकार त्रिकोण मे 9 भाव का स्वामि या भाव बलवान माना जाता है।

फलित ज्योतिष

- अगर कोइ ग्रह त्रिकोण और केन्द्र दोनो का स्वामि होतो विषेश फल देते है षुभ ।।
- दूषरा और द्वादष भाव भी छाया भाव है।
- दूसरे भाव का स्वामि अगर मित्र ग्रहो के साथ बैठा हो तो मित्र से और अगर शत्रु ग्रहो के साथ वैठा हो तो षत्रु से पैसा दिलाता है।

- व्यय भाव का स्वामि जहा वैठेगा उसी से सम्वन्धित पैसा खर्च कराता है।।
- 7,2 भाव मारक कहलाते है उसमे भी 2 जादा होता है ।
- द्वितीय भाव मे शुक्र होने से वह व्यक्ती जादा कामी होता है।
- राहु केतु अचानक फल प्रदायक है इसलिये प्रमोषन राजनीति मे सफलता लॅाटरी एक्सीडेन्ट इस तरह कि आकस्मिक घटनाये इन्ही कि दषा मे होति है।
- राहू षनि मंगल विभक्ति कारक ग्रह है जहा भी इनकी दृश्टी पड़ेगी वहा से ये अलग करा देते है।
- छठे भाव के स्वामि कि दषा जव आयेगी तव रोग षत्रु वा कमजोरी होति है।
- जितनी जादा ग्रहो कि दृश्टी लग्न पर होगी लग्न उतनी जादा मजबूत होगी।।
- सम्पूर्ण कुण्डली को अगर काल पुरूश माने तो –
  लग्न–सिर,ः दूसराभाव–चेहरा,ः 3–छाति,ः 4–ह्रदय,ः 5–पेट,ः 6–कमर,ः। 7–लिंग तक,ः। 8–गुप्तेन्द्रिय,ः। 9–जाघे,ः 10–घुटने,ः। 11–पिण्डलिया,ः। पैर–12,ः।।
- केन्द्र–1,4,7,10, त्रिकोण–5,9,1 त्रित्रिकोण–9, लीन भाव–6,3,8,12, त्रिक–6,8,12 पणफर–2,5,8,11, आपोक्लिम–3,6,9,12 उपचय–3,610,11, त्रिशडाय–3,6,11
- लग्नेष जहा होता है वहा वृद्धि करता है

फलित ज्योतिष

सूर्य–– आत्मा, पिता, प्रभाव, स्वास्थ, शक्ति, लक्ष्मी,

- चन्द्र––मन बुद्धि माता सम्पफि
- मंगल–– हिम्मत रोंग गुण लघु भ्राता शत्रु
- बुध–– विद्या वन्धु विवेक मित्र वाणी क्षमता
- गुरू––धन शरीर ज्ञान पुत्र
- शुक्र–– पत्नी वाहन आभूषण प्रेम शुख
- शनि–– आयु जीविका नौकरी विपफि
- राहू––दादा

- केतु–– नाना
- अष्टमेष के दोष को केवल लग्नेश दूर कर सकता है, मतलव अगर लग्नेश हि अष्टमेश हो तो दोष दूर होजाता है।।
- बुध मंगल का सम्बन्ध कही भी हो ऐसा व्यक्ती सिर से परेसान रहेगा सिर दर्द एवं पागल होने कि आशंका होती है।
- पंचम भाव मे मंगल हो ने से व्यक्ति मेडिकल , चिकित्सक मे निवुण होता है।
- बुध,शनि,राहू, तीनो यदि 2 भाव मे हो वह व्यक्ति वचपन मे रहता है और यदि बुध पर राहु शनि कि पूर्ण तो भी ऐसा ही होता है।
- बुध अगर 2,5 भाव मे होतो वक्तृत्व अच्छा होता है, लेकिन जव शनि राहू का सम्वन्ध नाहो तो तव।।
- द्वितीय स्थान वाणी का घर होता है। और बुध वाणी का देवता है।।
- लग्नेश पंचमेश का सम्वन्ध अच्छा ज्योतिषी वनाता है ।। शुक्र ग्रह जयोतिषी वनाता है।।
- पंचम भाव मे अगर शुक्र चन्द्र हो तो वह परस्त्री गामी होता है।।
- शुक्र बारवे स्थान मे होने से आसैर सूर्य उससे आगे हो यानि 9,11,10, भाव मे हो तो वह व्यक्ति विदेश यात्रा करता।।

फलित ज्योतिष

- चन्द्र छठे भाव होने से मानसिक अशान्ति बनाये रखता है।।
- बुध पर शनि राहू कि दृष्टी होतो वह त्वचा रोग देता है।
- शुक्र पाचवे या बारवे स्थान का स्वामि होने से व्यक्ति ज्योतिश व़िद्या मे निपुण होता है।।
- मंगल द्वितीय स्थान मे होतो वह व्यक्ति गोद जाता है ।।
- बुध एकादश भाव मे लुटेरा बनाता है
- लग्न मे चन्द्र और गुरू होने से राज योग होता है।।
- सूर्य बुध मंगल कही पर एक साथ हो तो जातक को धनाढ्य वना देते है।।
- केतु शुक्र दूसरे भाव मे होने से विषेश धनवान होता है

- पंचम भाव मे या एकादश भाव मे शनि होने से उसके जीवन मे पुत्री कि कमि नही रहती, पुत्र नही होता है
- छठे भाव मे राहु होने से व्यक्ति प्रायः विमार रहता है।।
- शनि जहा भी होगा वहा उस भाव कि वृद्धि करेगा क्योकि यह योग कारक होता है।।
- गुरू जितना निर्बल होगा उतना शुभ होता है
- गुरू नवम भाव मे होता है तो साधुओ मे प्रीति कराता है, तृतीय भाव मे होने से वैरागी वनाता है एवं उदार प्रकृति का वनाता है।।
- बुध गुरू पाचवे मे और चन्द्र 11 मे होने से करोड़ पति बनाता है ।
- गुरू चन्द्र योग गजकेशरी योग वनाता है।
- अकेला गुरू अगर 9 ंभाव मे होने से व्यक्ति को शुखी बनाता है।
- चौथा शनि व्यक्ति को नपुंशक वनाता है। या उस शुख मे कमि लाता है ।
- छठे भाव मे शनि मंगल चौर्य कलामे निपुण वनाता है ।
- अकेला शुक्र 7 मे लम्पट बनाता है।
- सप्तम भाव मे शुक्र शनि राहु हो तो जातक लम्पट धूर्त वा पराई स्त्री या पुरूष मे आशक्त वनाता है
- फलित ज्योतिष

पंचम बुध विदेश यात्रा कराता है

- बुध मंगल का योग स्वभाव का क्रोधी होता है और चोटे आती है।
-
- छठे का मंगल विशेष लाभदायक होता है।
- सप्तम भाव मे मंगल हो तो व्यक्ती शौकीन एवं परस्त्री गामी होता है।
- शुक्र शनि पंचम भाव मे होतो निरन्तर उदर रोग बना रहता है।
- दशम भाव मे शुक्र विशेष धनदायक होता है।
- सूर्य,गुरू, दशम भाव भाव मे होतो वह प्रशानाधिकारी होता है।

- अष्टम भाव मे बुध होतो त्वचा रोगी होता है।
- दूसरे भाव मे गुरू,11 वे मे शुक्र होने से गरीब भी अमीर हो जाता है।
- सूर्य मंगल पीड़ित होतो नीद कि विमारी होति है।
- 12 भाव का स्वामि ठीक ना हो तो भी नीद कि विमारी होति है।
- चन्द्र पीड़ित होतो विहोषी का रोग होता है।
- द्वितीय भाव सप्तम भाव ही मारक भाव कहलाता है।
- छठे भाव का स्वामि 2 मे होतो वह गोद जाता है।
- लग्न चन्द्र के वीच जितने ग्रह हो उतने ही स्त्रिया होति है।
- तृतीय भाव छोटे भाई वहन का और एकादश द्वादश मे जितने हो उतने वड़े भाई वहन होते है।
- नवम भाव मे जितने ग्रह हो उतने लोगो से सहारा लेना पड़ता है।
- सप्तमेश 3,6,11,10 मे होतो भाग्योदय शादी के वाद होता है।
-

- **भारतीय ज्योतिश**
- यद्यापि गुरू और शुक्र एक जैसे है फिर भी दोनो मे अन्तर यही है कि शुक्र संसारिक और व्योहारिक शुखो का दायक तो गुरू पारलौकिक और अध्यात्मिक का दायक होता है।
- शनि और मंगल भी एक जैसे है परन्तु शनि क्रूर ग्रह है पर परिणाम शुखद होता है किन्तु मंगल क्रूर भी है और परिणाम दुखद होता है
- सूर्य——पिता,आत्मा, प्रताप,आरोग्यता आसक्ति, लक्ष्मी।
- चन्द्र——मन बुद्धि माता, धन ।
- मंगल——पराक्रम, रोग गुण भाई भूमि, शत्रु ,जाति ।
- बुध——विद्या वन्धु विवेक,मामा, मित्र, वचन, ।
- गुरू——बुद्धि शरीर, पुत्र, ज्ञान, ।
- शुक्र——स्त्री, वाहन, भूषण, काम, व्यापार, शुख।

- शनि ——आयु जीवन विपद ।
- दादा जी का।
- नाना जी का।
- केन्द्र 1,4,7,10
- पणफर 2,5,8,11
- आपोक्लिम 3,6,9,12
- त्रिकोण 5,9
- उपचय 3,6,10,11
-
- चतुरस्त्र 4,9
- मारक 2,7
- नेत्रत्रिक 6,8,
- **भारतीय ज्योतिश**
- प्रथम भाव——रूप, चिन्ह ,जाति,शुख दुख विवके शील स्वाभाव आकृति।
- 2 भाव——कुल मित्र आख कान नाक गला मुख कुटुम्ब धन ।
- 3भाव——नौकर पराक्रम अभूषण साहस धैर्य खासी श्वास गायन,योगा।
- 4भाव—— गृह ग्राम मित्र वाहन माता।
- 5भाव——बुद्धि सन्तान विद्या विनय नीति देवभक्ति ।
- 6भाव——मामा शत्रु, शंका जमीदारी रोग गुदास्थान,।
- 7भाव——स्त्री मृत्यु काम चिन्ता ,मैथुन, जननेद्रिय,विवाह ,ववासीर,।
- 8भाव——व्याधि,आयु,मरण,मृत्यु कारण मानसिक चिन्ता,समुद्रयात्रा,ऋण,लिंग,योनि
- 9भाव——भाग्योदय,शील,विद्या,तप,धर्म,प्रवाश,तीर्थयात्रा,
- 10भाव——राज्य मान प्रतिष्ठा पिता प्रभूता व्यापार अधिकार ।
- 11भाव——मांगलिक कार्य, ।

- 12भाव——हानि भय व्यसन।
- 6,8,12,भाव के स्वामि जिस जिस भाव मे बैठेगे उस भाव का अमंल करेगे
- सूर्य मंगल शनि राहू मे क्रम से अधिक पाप ग्रही होते है।
- चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरू मे क्रम से अधिक शुभ होते है।
- 8,12 मे सभी ग्रह अशुभ होते है।
- गुरू 6 मे शत्रु नाशक। ,शनि आठवे मे दीर्घायुकारक होता है,मंगल 10वे मे भाग्य दायक होता है।, राहु केतु 8मेश सर्वथा अनिष्टकारक होता है।गुरू 2, 5 ,7 मे अशुभ होता है।
- सूर्य—आत्मा। चन्द्र—मन। मंगल—बल। बुध—बाणी। गुरू—ज्ञान। शुक्र—शुख। राहू—मद। शनि—दुख।। शनि जितना हीन होगा उतना ठीक

भारतीय ज्योतिश

- बुध अगर पीड़ित हो तो मूक योग बनता है,।
- नेत्र 2,12 भाव का है,12 भाव मे मंगल होतो वाम नेत्र मे एवं दूसरे भाव शनि होने दक्षिण नेत्र मे पीड़ा होती है।।
- लग्नेश बली होतो साहसी होता हैं।
- स्त्री के जन्म नक्षत्र से पुरूष जन्म के जन्म नक्षत्र तक,तथा पुरूष के जन्म नक्षत्र से स्त्री के जन्म नक्षत्र तक गिनने मे जो आये उसमे,अलग अलग 7 से गुणा करे 28 का भाग दे यदी स्त्री बाली शंख्या (पहली) शंख्या का शेष जादा हो स्त्री पहले मरे, और अगर दूसरी वाली का शेष शंख्या जादा होतो पुरूष पहले मरे।

कारक

1भाव– रूप रंग कद श्वभाव यश मान शिर आजीविका

2भाव – सुन्दरता,विद्या,कला,गूगांपन,गोद,जाना,मुख,वाणी,संगीत,धन
वडामामा,कुमार,अवस्था,आख,कुटुम्व,

3भाव–मित्रता,अचानकमृत्यु,लेखन कला,आत्महत्या,वायुयान,कान,कन्धा,छोटे

4भाव–भूमि,मकान,वदलालेना,मिरगी,माता,शुख,वाहन,जनसेवा,मन,फेफड़े,छाति

5भाव–विद्या,पुत्र,प्रेमविवाह,परीक्षा,लाटरी,इष्टदेव,खेल,सिनेमा,वड़ाशाला भाभि
जीजा

6भाव–गोदजाना,चोट,हिंसा,ऋण,मामा,चोरी,शत्रु,रोग,रूकावट,व्यसन

7भाव–विवाह,तलाक,पेमविवाह,गुप्तेन्द्रिय,वीर्य,नपुंसकता

,

8भाव–आयु,मृत्यु, विदेशयात्रा,अपमान,खतरेकाकाम,वड़ीमौसी,मौसिया,
वड़ी मामी

9भाव–भाग्य,दैवीसहायता,धर्म,पिता,नितम्भ,छोटीवहनकापति,लम्वीयात्रा,

10भाव–घुटने,सॉस,

11भाव–वड़भाई,पुत्रवधु,जमाता,चाचा,आय,वाजु

12भाव–पॉव,व्यय,छोटी मौसी,मन्दिर, मोक्ष,आख,कारागर जेल

रोग कारक

1भाव–सिर सम्वन्धी,ज्वर,पागलपन,स्मृति

2भाव–गला,आख,कान,गला,नाक,उंगलिया,हड्डी,मास,कव्ज

3भाव–गला,कफ,हाथ

4भाव–ह्रदय,फेफड़ा,छाति खून,पेटदर्द,गैस

5भाव–रक्तचाप,मेरूदण्ड,लीवरे,

6भाव–टायफाइट,अपेन्डिक्स,कालरा,किडनी,

7भाव–गुप्तांग

8भाव–उत्पादक अंग,खून,पेशाव,मासिकधर्म,गुप्तांग,

9भाव–वात,जघंा

10भाव–घुटना,हड्डी,मास,सफेददाग,

11भाव–एड़ी,,वायाकान,

12भाव–पंजा,शराव,,खून

फलित सूत्र

- प्रथम भाव ——वर्ण रूप,कद,यश सिर,आजिविका,स्वभाव, मान, अजिविका,
- द्वितीय भाव——मुख,धन, मृत्यु, वड़ेमामा, कुमार अवस्था,वाणी, आख,गूंगापन गोद जाना,विद्या,
- तृतीय भाव——कान कान्धे,सास किडनी,भाई,वायुयान यात्रा,मित्रता,अचानक मृत्यु,लेखन कला, वायुयान यात्रा,आत्मघात,
- 4भाव——माता मन जायदाद ,वाहन,शुख,फेफड़े, छाति,शत्रुता,देश निकाला,पुत्र से शुख, विद्रोह, पागल पन,विशेष रूचि,
- 5भाव——पुत्र, प्रिया, साला, भाभी, पेट, वहनोई, लाटरी, भाग्य, गर्भ वाणी, इष्टदेव, पागल पन,
- 6भाव——शत्रु ,रोग रूकावट, चोट चोरी, व्यसन, छोटे मामा,गोद जाना,हिंसा,ऋण,
- 7भाव——स्त्री ,गुप्तेन्द्रिय, वीर्य, नपुसंकता, काम ,विवाह, ।
- 8भाव——मृत्यु ,अपमान, समुद्र यात्रा, मौसी, मामी, विदेश यात्रा,
- 9भाव——दैवी सहायता, धर्म, तप, स्वदेश यात्रा,
- 10भाव——शासन, पदवी, यश, घुटने, व्यवशाय,
- 11भाव——वड़ा भाई, आय, चाचा, ससुराल से धन प्राप्ति,हवाइ यात्रा11,7,3भाव भी
- 12भाव——पॉव, व्यय, मोक्ष,आख, कारागार, ।

- सूर्य षष्ठ द्वादश और द्वितीय मे हो तो नेत्र रोगी होता है ।सूर्य द्वतीय दशम मे होने से राज्य अधिकारी वनाताहै ।यह स्वरो के साथ शुभ दायक होता है। एवं यही हड्डी कारक भी माना जाता है ।चतुर्थ का चन्द्र अगर स्वराषिकि हो तो भी शुभ है ।यह फेफडे का प्रतिनिधि करता है। चन्द्र य र ल व श स ह इन वर्णो के साथ शुभ होता है
- **फलित सूत्र**
- मंगल छोटे भाई का कारक माना जाता है। मंगल क वर्ग के साथ शुभ दायक होता है। मंगल पंचम मे युति या दृष्टी शुभ माना जाता है ।विद्या के लिये।। वुध त्वचा का कारक माना जाता है। वुध शनि राहू लम्वे

- आकार के माने जाते है यदी लग्नेश पर इनका सम्वन्ध हो तो व्यक्ति लम्वा होता है।। यह एक नपुंसक होता है 7 भाव
- वुध टवर्ग के साथ शुभ दायक माना जाता है।।
- गुरू पति कारक माना जाता है यह त वर्ग का प्रतिनिधि करता है
- शुक्र विलासिता ग्रह है

।। आयु विचार।।

प्रकरान्त आयु से भयाद को 90 से घटाकर

केन्द्रायु – कुण्डलि के केन्द्रो कि शंख्या को जोड़कर 3 का गुणा करे और केन्द्रो मे

अगर शनि राहु मंगल हो तो उसकी राषी को घटा दे। जो आये वही आयु होगी।।

जन्म कुण्डली के केन्द्रांको कि शंख्या त्रिकोणो कि शंख्या केन्द्रस्थ ग्रहो कि शंख्या,त्रिकोणस्थ ग्रहो कि शंख्यायो को जोड़कर 12 से गुणा करे जो आये उसमे 10 का भाग दे जो जो भागफल आये वही वर्ष मास दिन आयु का होगा ,जो केन्द्रो मे राषी शंख्या वो केन्द्राकं शख्या और ग्रहो कि नम्वर शंख्या जैसे सूर्य हो तो 1, चन्द्र हो 2 ।।

भयाद को 90 से घटाकर 4का गुणा करे 3 का भाग दे जो लब्धादि आये वही वर्षादि आयु होति है।।

कुण्डली जीवित या मृत कि

जन्म लग्न , अष्टम, और प्रश्न लग्न कि शंख्या को जोड़कर अष्टमेश कि शंख्या से गुणा कर के लग्नेश कि राषी शंख्या से भाग दे शेष सम होतो मृत कि विषम होतो जीवित कि कुण्डली समझनी चाहिये।।

विवाह विचार

सप्तमेश या सप्तम भाव से इसका विचार किया जाता है। शुक्र पाप ग्रह मे हो, या नीच का हो तो दो विवाह कि सम्भावना वनती है।

- सप्तम मे वहुत पाप ग्रह होतो और सप्तमेश भी पाप ग्रहो से युक्त हो तो 3 विवाह का योग वनता है।
- 7,11 भाव मे बुध हो तो वह वेश्या गामी वनता है।
- लग्नेश से शुक्र जितना नजदीक हो उतना जल्दी विवाह होता है शुक्र जिश राषी मे हो उस राषी कि दशा मे विवाह होता है।
- विवाह किश दिशा मे होगा इसका विचार शुक्र से किया जाता हैं।
- लग्न मे जहा चन्द्रमा पड़े उसके वीच मे जितने पाप ग्रह पड़े उतने विवाह होते है
- चारो केन्द्रो मे पाप ग्रह होतो वह वहुत कामी होता है
- शप्तमेश कि दशा मे विवाह होमा है
- लग्नेश गोचर वस जव सप्तम भाव मे आये तव विवाह होता है।
- अगर सप्तमाधि पति

  सूर्य–24, चन्द्र–20, मंगल–16, बुध–18, गुरू–22, शुक्र–18, शनि–26, ये वर्ष कन्या के है,वर मे दो और जोड़ दे, सप्तम मे या शप्तमेश मे अशुभ दृष्टी मे, वर्ष+4 एवं स्थिति (युति) वर्ष+2 वरावर विवाह वर्ष इसी तरह शुभ ग्रहो कि युति मे –2 और दृष्टी मे 4 ग्रह वर्ष मे घटा देगे ।

- सप्तम पंचम वा लग्न मे 3 नोका या 7,5 का सम्वन्ध होने से प्रेम विवाह होता है।
- सप्तम भाव और द्वादश भाव का सम्वन्ध होतो व्यक्ति कामातुर होता है । एवं या 7 भावमे या 7मेश के साथ शुक्र, और मंगल कि दृष्टी या युति होने से भी व्यक्ती कामुक होता है।
- *नाड़ी दोषस्तु विप्रानां वर्ण दोषस्तु क्षयित्रे। गण दोषस्तु वैश्यश्च योनि दोषस्तु पादजान।।*

विवाह विचार

- सप्तममेश अगर द्वादश मे होतो गुप्त कामातुर होता हैं, पंचमाधिपति भी सामिल हो जाय तो वह अति कामुक होता है।
- पुरूषो के लिये शुक्र एवं स्त्रियो के लिये गुरू कि प्रवलता भी निर्भर करती है।
- जव शनि राहू अथवा द्वादशेष का प्रभाव सप्तम या सप्तमेश मे पड़े तो दम्पती प्रथक हो जाते है।
- मंगल व सूर्य का सम्बन्ध 7,या 7मेश पर पड़े तो लड़ाई होति है दम्पती मे।
- धनेश और आयेश अगर सप्तम मे मे हो या 7मेश 2ओनो मे हो तो वड़े घराने मे विवाह होता है।
- सप्तम मे या सप्तमेश सम राशी का होतो दम्पती शुन्दर होता ह, शुक्र भी देखना अनिवार्य है।
- सूर्य वृश्चिक मे कलंक देता है,
- 1,4,,7,8,12, भाव मे मंगल होनेसे मंगली दोश होता है,1,4,7,9,12, भाव मे शनि होने से मंगली दोश नही होता है।
- कर्क सिहं एवं कुंभ लग्न वालो को मंगली दोश नही होता,या कम होता है राषिया वोलती है103ँ ।
- मंगल के साथ शनि वा राहु होने से मंगली दोष कम हो जाता हैं। 1 ,7 ,8 का मंगलअत्याधिक दोष कारक होता है।
- 27 गुणो से अधिक गुण मिलते हो तो मंगली दोष कम हो जाता है
- मंगल शुक्र वाशना कारक है इनका एक साथ रहना चरित्र दोष लगाता है लग्न या सप्तम मे इनकीउपस्थिति ठीक नही है

- चन्द्रमा शुक्र भी कम उम्र मे चरित्र हीन वनाते ळें

- दोनो की लग्न राषी एक हो या 7 भाव कि राषी एक हो तो भी शुभ होता है।
- लग्न या राषि आपश मे 6/8 या 2/12 नही होना चाहिये 6/11या 1/7 शुभ है।
- सप्तम मे अगर शुक्र और राहू होतो विवाह विदेश मे होता है।
- लग्नेश से शुक्र जितना नजदीक होता है विवाह उतनी जल्दी होता है।और
- स्त्री के जन्म नक्षत्र से पुरूष के जन्म नक्षत्र तक गिने जो आये उसमे और पुरुष के जन्म नक्षत्र स्त्री के जन्म नक्षत्र तक जो शंख्या आये उसमे अलग अलग 7 से गुणा करे और 28 का भाग दे और शेष अगर पहली शंख्या जादा आये तो स्त्री पहले मरे और दूसरी पुरूष वाली शख्या मे शेष जादा रहे तो पुरूष पहले मरे।

ग्रह प्रकृति		ग्रह	उच्च ,नीच	ग्रह	लिगं
सूर्य	पित्त	सूर्य	1,7	सूर्य	पु
चन्द्र	कफ	चन्द्र	2,8	चन्द्र	स्त्री
मंगल	पित्त	मंगल	10,4	मंगल	पु
बुध	सम	बुध	6,12	बुध	नपुं
गुरू	कफ	गुरू	4,10	गुरू	पु
शुक्र	वात कफ	शुक्र	12,6	शुक्र	स्त्री
शनि	वात	शनि	7,1	शनि	नं
राहू	वात	राहू	3,9	राहू	पु
केतु	वात	केतु	9,3	केतु	पु

ग्रह रस		ग्रह देवता	पंचमेश	ग्रह विवाह वर्ष सप्तमेश		
सूर्य	तिक्त,कटु	सूर्य	अग्नी,विष्णु,	सूर्य	24	ये कन्या के है
चन्द्र	छार,लवण	चन्द्र	वरूण,सरस्वती,शिव	चन्द्र	20	वर मे दो और
मंगल	कटु,तिक्त	मंगल	स्कन्ध,हनुमान,	मंगल	16	जोडना है,शुभ
बुध	मिश्र	बुध	विष्णु,विष्णु,दुर्गा	बुध	18	ग्रह कि दृष्टी मे
गुरू	मधुर	गुरु	इन्द्र,व्रह्मा	गुरु	20	प्लश,4। स्थितिमे
शुक्र	अम्ल	शुक्र	देवी,दुर्गा,लक्ष्मी	शुक्र	18	प्लश 2 ग्रह मे
शनि	कशाय,तिक्त	शनि	व्रह्या,शिव,भैरव	शनि	26	
राहू	कषाय,तिक्त	राहू	वायु,सरस्वती	राहू		
केतु	कषाय,तिक्त	केतु	आकाश,गणेश	केतु		

ग्रह कारक		ग्रह धातु		ग्रह भाग्योदय		ग्रह दृष्टी,		हाइट	स्वराषि
सूर्य	आत्मा	सूर्य	हड्डी	सूर्य	22	सूर्य			5
चन्द्र	मन	चन्द्र	रक्त	चन्द्र	24	चन्द्र			4
मंगल	शक्ति	मंगल	मास	मंगल	28	मंगल	4,8,7	नाटा	1,8
बुध	वाणी	वुध	चर्म	बुध	32	बुध			3,6
गुरु	विद्या	गुरू	चर्वी	गुरु	16	गुरु	5,9,7	लम्वा	9,12
शुक्र	वासना	शुक्र	वीर्य	शुक्र	25	शुक्र		नाटा	2,7
शनि	संघर्ष	शनि	स्नायु	शनि	35	शनि	3,10,7	लम्वा	10,11
राहु	विकार	राहू	नस	राहू	42	राहू		लम्वा	6
केतु	खेद	केतु	नस	केतु	48	केतु		लम्वा	3

ग्रह जप शंख्या		रत्न निषेध लग्न वा राषी को जिसकी राषी हो	शिक्षाा
सूर्य	7 हजार	वृष, कन्या, तुला मकर कुम्भ	चिकित्सा शास्त्र
चन्द्र	11 हजार	तुला धनु मकर कुम्भ	पाक कला
मंगल	10 हजार	मिथुन कन्या तुला कुम्भ	तकनीक विद्या
बुध	9 हजार	मेष कर्क वृश्चिक मीन	गणित इलेक्ट्रानिक
गुरु	19 हजार	वृष मिथुन कन्या तुला कुम्भ	कानून,दशर्न
शुक्र	16 हजार	मेष कर्क सिंह	कला विज्ञान
शनि	23 हजार	मेष कर्क सिंह वृश्चिक धनू	तकनीक विद्या
राहू	18 हजार	मेष कर्क सिंह धनु मीन	कम्प्यूटर अंग्रजी
केतु	17 हजार	सिह वृश्चिके	

रत्न धारण विचार

रत्न	दिन	समय	रत्ती	उंगली	धातु	नक्षत्र	अवधि	अग्रेजीना
माणिक्य	रवि	सुर्योदय	3,	अनामिका	सोने तावा	पुष्य	4वर्ष	रुवी
मोती	सोम	चन्द्रोदय या शाम 5 से 7	6, 2,4,11	कनिष्ठका अनामिका	चादी	रोहणी	2,1,27	पर्ल पद्मराग
मूॅगा	मंगल	शाम 5से 7या सुर्योदय से 1 वाद	5 6	अनामिका	सोने तावा		3वर्ष	कोरल विद्रुम
पन्ना	वुध	दिन 12से2 सुर्योदयसे 2वा	6	अनामिका कनिष्ठिका	सोने	उ0फा	3वर्ष	एमेराल्ड मरकत
पुखराज	गुरु	दिन10से12 सूर्योस्तसे 2पूर्व	6,911 7,12	तर्जनी	सोने	पुष्य	4,3,18	यैलोसैफायर पुष्पराग
हीरा	शुक्र	चन्द्रोदयशाम दिन10से12	6,7,10 $1\frac{1}{2}$–	मध्यमा	चादी	मृगशिरा	7वर्ष	डायमंड वज्रमणि
नीलम	शनि	शाम5से7 या	6,710,3	मध्यमा	पंचधातु	श्रवण	5वर्ष	सैफायर
गोमेद	शनि वुध	सूर्यास्तसे2घंटेपूू सायं काल	6कम ना ले	मध्यमा	पंचधातु	उ0फा		इन्द्रनील हैसोनाईट गोमेदक
लहसुनिया	शनिमंगल	रात्रि समय		कनिष्ठका	पंचधातु	पुष्य		कैट्स आई वैदूर्य

	ग्रह दिशास्वामि	ग्रह कारक
सूर्य	पूर्व	शाशकीय पदाशीन,न्यायाधीश,पिता ,आख हड्डी,आत्मा,ह्दय?
चन्द्र	वायव्य	मध्यमवर्गी जन माता,रक्त,मन,संवेदना,फेफडे
मंगल	दक्षिण	सेनापती, सैनिक,वैद्य,आन्दोलान छोटाभाई,साहस,कामना,अत्याचार,
वुध	उत्तर	लेखक पत्रकार,त्वचा,सास नली,
गुरु	इशान	न्ययाधीस,महन्त, उद्योगपती,,वकील,ज्ञान,पेट,पॉव,पुत्र वड़ा भाई
शुक्र	अग्नेय	फैशन जगत,स्त्री,व्यभिचार,मुख, मूत्रेन्द्रिय,वीर्य,विलास
शनि	पश्चिम	कृषि कर्म,नौकरी,श्रम,
राहू	नैऋत्य	
केतु	सर्व दिशा	

	ग्रह कारक विचार
सूर्य	पित्त कारक,सिर दर्द,आख ह्दय,त्वचा,कुष्ठरोग,हड्डी रोग
चन्द्र	फेफडे,टीवी, छाती, किडनी,अस्थमा,
मंगल	चोट,जलना, चेचक,नाक,ललाट,रक्तचााप,
बुध	चर्म रोग, सफेद रोग
गुरु	पीलिया,लीवर,पाचन,जीभ,मोटापा किडनी
शुक्र	त्वचा, मोतिया विन्द,गुप्त रोग,मूत्र,
शनि	लकवा, आलस्य,गंजापन, दात,घुटना,वाल,चर्म
राहू	श्वास,
केतु	गुप्त विमारिया जिसका पता ना हो ह

व्यापार एवं. व्यावसाय

जातक का जन्म यदि स्थिर लग्न 2,5,8,11 का हो तो व्यक्ति स्थिर आमदनी होति है लग्नेश वली होतो शारीरिक क्षमता,जोश से काम करता है,
सूर्य वली होतो आत्म विश्वाश वाला होता है,वुध होतो पोजिटिव विचारो वाला होता है
और स्थिर राशी का चन्द्र होतो विशेष सहायक होता है।।
चर राशि का चन्द्र हातो वो वार वार अलग अलग व्यवसाय मे पैसा फसाता है। और वदलता है।
3,7,11 लग्न वाले को व्यवसाय नही करना चाहिये क्योकि गुस्सा वार वार आता है।
इसी तरह जल तत्व राषि 4,8,12 लग्न वाले को भी व्यवसाय मे नही पड़ना चाहिये क्योकि व्यवहार सही नही होता है।
पंचमेष उच्च त्रिकोण,मे होने से जो पड़ता है वही व्यवसाय करता है,एवं लाटरी आदि मे भी लाभ होता है।

सूर्य– फाइनेन्सर,वीज विक्रेता,एंटीवयटीक,स्कूल कालेज प्रवंधक,मैनेजमेन्ट,सामाजिक कार्य कर्ता,उत्पादक,आर्किटेक, राजसी सरकारी,जौहरी,डिजायनरी,

चन्द्र– लाईव्ररी, लेखक,डिजायनर,चप्पल,जूता,सलाहकार,सूचना अधिकारी, मनोवैज्ञानिक, ट्रांसपोर्ट, कंपनी मालिक, प्रकाशन,पत्रारिकता,पानी का काम,

मंगल– सेनाअधिकारी, प्रापर्टी डीलर, मेडिकलशाप, पुलिशअधिकारी, स्पोर्ट खिलाडी, सिक्योरिटी,गुंडा,हथियार विक्रेता, चिकित्सक,

वुध– सी ए,क्लर्क संपादक प्रकाशक वक्ता, कैश प्रवंधक, जनरल स्टोर, एकांउट, न्युज एंकर,

गुरू – अधिकारी वक्ता, वेब डिजायनर,संगठन, मैनेजमेन्ट, कम्प्युटर प्रोग्रामर, राजनीतज्ञ, व्यवसायी, संपादक, प्रोफेसर, वकील, पुजारी महंत, ज्योतिषी, धार्मिक कार्यकर्ता, होटल मालिक, न्यायाधीष,राजदूत, प्रकाशक, सरकारी नौकरी, मार्गदर्शक,

शुक्र– मीडिया प्लानर, सर्जन, इंटीरियर डेकोरेटर, फोटोग्राफर, ज्योतिशी, टीवी एंकर, एक्टर, फैशन, ज्वैलरी, संगीतज्ञ, माडल,गायक, आर्युवेदज्ञ, आभूषण मिठाई निर्माता, विक्रता,

शनि– उत्पादन, हार्डवेयर, शोधकर्ता, विदेशीभाषा अनुवादक, कम्प्युटर, अध्यापक, कवाड़ी सेलर, फैक्ट्री,

राहू– व्रोकर होटल घोटाला, शराव ठेकेदार, नशा,

केतु– हवा युक्त,

चोरी विचार

प्रश्न कुण्डली वनाये–

सूर्य वली हो तो पूर्व दिशा मे

चन्द्र हो तो वायव्य मे–

बुध हो तो उत्तर मे– इसी प्रकार जिस दिसा का स्वामि जो हो और वली होतो उसी दिशा मे धन जाता है।

इसी प्रकार चन्द्र लग्न मे होतो पूर्वमे

सप्तम मे चन्द्र होने से पश्चिम दिशामे

10 मे चन्द्र मे होने से दक्षिण मे होता है

चन्द्र 4मे होतो उत्तर दिशा मे।।

कुण्डली मे चोर का स्थान सप्तम मे होता हैएवं धन रखने का स्थान अष्टम मे होता है।।

सप्तमेश मे या सप्तम मे सूर्य होने से मे सूर्य होने स चोर एक घर का हि होता है,एवं घर का श्रेष्ट होता है।चन्द्र होता है तो स्त्री चोर होती है,मंगल होतो भ्रातृ पुत्रादि हि चोर होता है, गुरु होतो पुरोहित चोर होता है, शुक्र होतो स्त्री चोर होती है,शनि होतो नौकर या नीच जाति का चोर होता है,

2 रोहणी, पुष्य, उ0फा0, विशाषा, पूवार्षाढा, धनिष्ठा, रेवती, ये अन्धे नक्षत्र है।,
मृगशिरा, श्लेषा, हस्त,अनुराधा, उ0षाढा,शतभिषा अश्वनी, ये मन्दे है।
आद्रा,मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पू0भा0, भरणी ये काणे है।
पुर्नवशु, पू0फा0, स्वाति, मूल श्रवण, उ0भा0, कृत्तिका ये नक्षत्र सुलोचन है।
अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे च दिन त्रयम।
काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव दृश्यते।।

मेष –	अग्नि	चर
वृष –	पृथ्वी	स्थिर
मिथुन–	वायु	द्विस्व
कर्क–	जल	चर

-
- सर्वोपरी चक्रम
- **न वर्ण न वर्णौ न गणों न योनी**——————————

वर्ग वर्ण गण योनि राषि षडाष्टक तारा नाड़ी नवम पंचम ये सव भी ना मिले मगर वर कन्या का एक स्वामि हो या दोनो मे मित्रता होतो तो जानो सव मिल गयी विवाह शुभ है।।

ग्रह जाप शंख्या

सूर्य—7000, चन्द्र 11000, मंगल—10000, वुध—8000, गुरू—19000, शुक्र—11000, शनि—23000, राहू—18000, केतु—17000।। कलियुग मे इनका चार गुना जाप होता है

ग्रह दान समय

वुध मंगल का दान सूर्योदय के 2 घंटे वाद, शनि का दोपहर मे, चन्द्र गुरू का सायं मे, शुक्र सूर्य का सूर्योदय समय, राहू केतु का रात्रि मे, दान करे।।

छीक विचार

पूर्वं छिक्का भवेत् म्रत्युःराग्नेया शोक एव च।
हानिश्च दक्षिणे भागे नैऋत्ये प्रिय दर्शनम।
पश्चिमे मिष्ठा भौज्यं च वायव्ये धन लाभतः।
उत्तरे फल हरश्चैव ईशाने च शुभा स्मृतः।।

कुण्डली पुरूष या स्त्री कि

राहू और सूर्य जिस राषि पर हो उस राषि की शंख्या तथा लग्नांक को जोड़ कर 3 का भाग दे शेष 0/1 वचे तो स्त्री और 2 वचे तो पुरूष कि होति है।।

स्कुटर कार खरीदना

तिथिः—1,2,3,5,7,10,11,13,15
वारः— शनि मंगलवार को छोड़ कर
नक्षत्रः— अश्वनी मृग, पुर्न, पुष्य, हस्त, स्वा, अभि, श्रवण, धनि,
खरीदने वाले कि राषि से 4,8,12 चन्द्र अशुभ है।

साढे साति शनि विचार

जन्म राषि से जव शनि गोचर वस 12–1–2 स्थान मे आवे तो साढे साति और 4–8 हो तो ढैया होति है। 1 मे पेट, 2 मे पैर, 12 मे नेत्रो मे प्रभावशालि होता है।।

मंगली देखना

1,4,7,8,12 भावो मे मंगल होने से मंगली होता है तथा 1,4,7,9,12 भाव मे शनि होने से दोष खत्म होता है।।

भद्रा देखना

मेष ,मकर, वृष, कर्क मे चन्द्रमा हो तो स्वर्ग मे, कन्या, मिथुन, तुला, धनु मे पाताल मे, कुम्भ मीन वृश्चिक सिंह के चन्द्र मे मृत्यु लोक मे भद्रा निवास करती है।

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्ये पाताले च धनागमः।

मृत्यु लोके यदा विष्टि सर्व कार्य विनाशिनी।।

विवाह वर्जित योंग देखना

अमावसया, रिक्ता4,9,14, जन्म नक्षत्र, क्रूर वार, गण्डान्त नक्षत्र भद्रा

नाम राषि विचार

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रह गोचरे।
जन्म राषि प्रधानत्वं नाम राषि न चिन्तयेत।।

ग्रह विचार विवाह

कन्या के लिये गुरू का एवं वर के लिये सूर्य का वल देखना चाहिये
ये ग्रह अगर 4,8,12 भाव मे हो तो विवाह निषेध है।।
अष्ट वर्षा भवेद गौरी नववर्षा च रोहणी।
दश वर्षा भवेद कन्या अतः उर्ध्वं रजस्वला।।

कन्या दान समय देखना

मेष वृष सिहं ये लग्न दिन मे अन्धे है, 6,3,4 ये लग्न रात्रि मे अन्धे हैं।10,7,8 दोपहर मे वहरे है। 9,11,12 संध्या मे कुवड़े है
दिन के अन्धे मे कन्या दान करने से वरकि हानि, रात्रि मे धन हानि,। वहरे मे दुःख। कुवड़े मे वंश नाश होता है।।

तेल चड़ाने का दिन

रविवार को तेल चड़ाने से ताप, सोमवार को अच्छा, मंगल को कष्ट , वुध को धन मिले, गुरू को धन हानि, शुक्र को दुख ,शनि को शुख मिले।।
दोष उपाय– सोम को तेल, गुरू को दूर्वा, भौम को रज, शुक्र को गोवर मिलाने से दोष दूर होता है।

चन्द्र वास फल

- 1,5,9 के चन्द्रमा का पूर्व मे वास 2,6,10 का दक्षिण मे, 3,7,11 का पश्चिममे , 4,8,12 का उत्तर दिशा मे चन्द्र का वास होता है।। मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे———।।
- सम्मुखे चार्थ लाभाय पृष्टे तु धनक्षयः।।
- दक्षिणे शुख सम्पर्ति वामे तु मरणं भवेत।
- यात्रा, मकान निर्माण,कुआ,सभी शुभदायक कामो देखना चाहिये
- करण, नक्षत्र, वार, सक्रान्ति ,मंगल शनि ,राहू, रवि, इतने दोश सम्मुख चन्द्र दूर कर देता है। हरति सकल दोश चन्द्रमा सन्मुखस्तथः।।

.

पंचक देखना

धनिष्ठा पंचके त्याज्यं तृण काष्ठादि संग्रहे।
त्याज्या दक्षिण दिग्यात्रा गृहाणां छादनं यथा।।

तिथि ज्ञान

1,611, नन्दा 2,7,12 भद्रा, 3,8,13 जया, 4,9,14 रिक्ता 5,10,15, पूर्णा तिथि

ऋतु ज्ञान

वसन्त, गीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर

अग्नि वास देखना

तिथि वार को जोड़ कर एक और मिलाये फिर 4 का भाग दे शेष 3,0 वचे तो शुभ एवं 1,2 वचे तो अशुभ होता है।।

परिभाषाय

60 प्रतिपल– 1 विपल,	60 विपल–1पल	60 पल– 1घटी
24 मिनट–1 घटी	ढाई पल–1मिनट	ढाई विपल–1सेकण्ड
ढाई घटी–1घण्टा	60प्रतिविकला–1विकला	60विकला–1कला
60कला–1अशं	30 अशं 1 राषी	12राषी–1 भगण

यात्रा योग

य़ात्रायां दक्षिणो राहू योगिनाी वामतः शुभौ।
पृष्ठतो द्वयमाख्यातम चन्द्रमा सन्मुखो शुभ।।
दाइ तरफ राहू, बाये योगनी, भद्रा पीछे, सामने का चन्द्रमा शुभ होता है।।

योगिनी देखना

पड़वा, नवमी, मे पूर्व, 3,11 मे अग्नीकोणमे।।, 5,13दक्षिण मे,।। 12,4 नैत्रृत्यकोण मे,।। 14,6 मे पश्चिममे ।। 15,7 मे वायव्य मे,।। 10,2 उत्तर मे।। 30,8 ईशान कोण मे योगिनी निवाश करती है।।

योगिनी शुखदा वामे पृष्ठे वांछित दाइनी।
दक्षिणो धन हन्त्री च सम्मुखे मरण प्रदः।।

काल वास

रविवार को उत्तर मे, सोमवार को वायव्यमे, मंगल को पश्चिममे, वुध को नैत्रृत्य मे, गुरू को दक्षिण मे, शुक्र को अग्नि मे, शनि को पूर्व मे काल का निवाश होता है।।

काल का निवाश जिस दिशा मे हो वहा नही जाना चाहिये।।

16 संस्कार

गर्भाधान, पुसंवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चौल कर्म, कर्ण वेध, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समार्वतन, विवाह, परिग्रह, और अन्त्येष्ठी।। ये 16 संस्कार कहलाते है एवं यज्ञानुष्ठान 32 संस्कार है अतः 48 संस्कार होते है।।

दिशा मे शूल परिहार

रविवार को पान,धी सोमवार को चावल,दूध, मंगल को आवला,गुड़, वुध को मीठा,तिल, गुरू को दही, शुक्र को चरपरा, जौ शनि को उड़द खा कर जाये।।

राहू विचार

रविवार को नैऋत्य सोमवार को उत्तर मंगल अग्नि वुध पश्चिम गुरू ईशान शुक्र को दक्षिण शनि को वायव्य मे राहू रहता है यह दाहिने शुभ रहता है

उशः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च वृहस्पतिः ।
अंगिरा मन उत्साहो विप्र वाक्यं जनार्दनः।।

प्रस्थान रखना– व्राह्मण को जनेउ, क्षत्रिय को शस्त्र एवं वैश्य को मीठा, शूद्र को फल, और जातियो को अन्न या सोना रखना चाहिये।।

सूतक निर्णय

यदा यदा भवेद्दाह सूतकं मृत पूर्वकम्

दाह किसी भी दिन हो मगर सूतक जभी लगता है जव व्यक्ति मरता है, मतलव मृत दिन से ही।।

दिन का समय जानना

अपने शरीर कि छाया अपने पावॅ से नापना ,जितने पॉव छाया हो उसमे 6 और मिलाये 121 मे उसका भाग दे जो भागफल आये वो घटी जो शेष आये वो पल जानना चाहिये, दिन अगर उतर रहा हो तो उतना दिन वचा जानना चाहिये।।

स्त्री को संग रखना

युद्धेशु पृष्टतः कुर्यात मार्गे अग्रतो निसरेत।
ऋतु काले च वामांगी पुण्य काले तु दक्षिणे।।

पंच रत्न

सेना चादी तावा मूंगा मोती

शिव वाश

तिथि को दूना कर के 5 और मिलाये 7 का भाग दे जो शेष 1 हो तो कैलाश पर श्रेष्ठ, 2 वचे तो गौरी पाशश्रेष्ठ, 3 वचे तो वृषारूढ श्रेष्ठ, 4 सभायां सन्ताप मिले, 5 मे पीड़ा, 6 मे क्रीडा मे शोक, 0 श्मशान मे

पृथ्वी शयन

सूर्य सक्रान्ति से 5,7,9,10,31,14 इतने दिन धरती सोति है,इसमे पृथ्वी खोदना नही चाहिये।।

पाये ज्ञान

अगर चन्द्र लग्न मे या लग्न से6 ,11 भाव मे होतो सोने के पाये2,5,9 हो तो चॅादी के पाये, 3,7,10 मे होतो तावे के पाये एवं 4,912 भाव मे चन्द्र होने से लोहे के पाये होता है चादी तावा शुभ होता है।।

(2) आद्रा से 10 नक्षत्र चादी, पु0षा0से 7 तावा, रेवती से 6 नक्षत्र सोना, विषाखा से 4 नक्षत्र तक लोहे के पाये।।

मूल ज्ञान

मूल, ज्येष्ठा, रेवती, मघा, अश्वनी,अश्लेषा

पाये ज्ञान

अगर चन्द्र लग्न मे या लग्न से6 ,11 भाव मे होतो सोने के पाये2,5,9 हो तो चॅादी के पाये, 3,7,10 मे होतो तावे के पाये एवं 4,912 भाव मे चन्द्र होने से लोहे के पाये होता है चादी तावा शुभ होता है।।

(2) आद्रा से 10 नक्षत्र चादी, पु0षा0से 7 तावा, रेवती से 6 नक्षत्र सोना, विषाखा से 4 नक्षत्र तक लोहे के पाये।। पंचाग व्रजभूमि

आठ प्रकार के विवाह–

1व्राह्म विवाह। 2देव विवाह – यज्ञ समय व्राह्मणो को कन्या दे देना दक्षिणा रूप मे 3 आर्ष विवाह– दो गायो को देकर वर वधु को। 4प्रजापत्य विवाह–साथ मे रहकर धर्म का आचरण करो ऐसा कहकर। 5असुर विवाह–धन लेकर कन्या दी जाय। 6 गन्धर्व विवाह– प्रेम विवाह।
7 राक्षस विवाह– युद्व मे जीतकर लाना। 8 पैशाच विवाह– छल पूर्वक विवाह किया जाय तो।

व्राह्मो दैवसस्तथै वार्षं प्राजापत्यस्तथा सुरः ।गन्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः।

जन्म पर 6 मूल विचार

नक्षत्र	1चरण	2चरण	3चरण	4चरण
अश्वनी	पिता को कष्ट	एश्र्वय	मंत्री पद	राज सम्मान
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	शुख	धनवानविद्वान
ज्येष्ठा	वड़ेभाई को कष्ट	छोटेभाई को कष्ट	मातृ कष्ट	स्वयं कष्ट
रेवती	राज सम्मान	मंत्री पद	धन शुख	अनेक कष्ट
अश्लेषा	पिता को कष्ट	मातृ कष्ट	धन हानि	शुख
मूल	शुख	धन हानि	मातृ कष्ट	पितृ कष्ट

अश्लेषा मूल ज्येष्ठा 27 दिन मे, उसी नक्षत्र मे, अश्वनी मघा रेवती 8या 12 वे दिन मे शान्ती होति है,

देव शयन

आषाढ़ शुक्ल 11 एकादशी कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते है। इसे देवशयन या चार्तुमास कहते है। इसमे विवाह, उपनयन, गृहारम्भ, शान्ति, देवस्थापना,

शुक्र गुरू अस्त मे वर्जित कार्य

विवाह, मुण्डन,उपनयन, कर्ण छेदन, दीक्षा, गृह प्रवेश द्विवरागमन, वधुप्रवेश,देवप्रतिष्ठा, कुआॅ जलाशय खोदना,

काल सर्प दोश कि करामात

कालसर्प दोश एक श्राप नही एक दोश है जो जातक को परेशान करता रहता है,किन्तु ऐसा नही है कि यह दोश खत्म नही होता, और हमेशा कष्टकारी होता है। राहू का जन्म नक्षत्र भरणी है, केतु का जन्म नक्षत्र अश्लेषा है भरणी का स्वमी काल,अश्लेषा का स्वामि सर्प है। इसीको मिलाकर काल़+सर्प वनता है।
काल सर्प दोश 2 प्रकार का होता है–
1 उदित(ग्रस्त)
2 अनुदित(मुक्त)
चन्द्र केतु,चन्द्रराहु,सूर्यकेतु,सूर्यचन्द्र,कि युतिया कालसर्प दोश कि तीव्रता को पुष्ट करता है।
2–3–6–7 लग्नो मे पड़ने वाले काल सर्प योग जादा भंयकर होता है।
पूर्ण काल सर्प मे महा दशा मे राहू केतु जहा हो उस भाव से वन्चित कारा देते है।,
काल सर्प 12 प्रकार का होता है,–
1(अनन्त) लग्न मे राहू।
2(कुलिक) दूसरे भाव मे राहू।
3(वासुकि) 3मे राहू।
4(शंखपाल)4मे राहू।
5(पद्म) 5 मे राहू।
6(महापद्म) 6 मे राहू।
7(तक्षक) 7 मेराहू
8(कर्कोटक)8मे राहू
9(शंखपाल) 9मे राहू।
10(पातक)10मे राहू।
11(विशाक्त)11मे राहू।
12(शेषनाग)12मेराहू।
12 गुणे 12=144 144 गुणे 12=1728 गुणे 2 वरावर 3456 प्रकार के कालसर्प होते है।
12 गुणे 12 गुणे 2 वरावर 288 प्रकार का होता है।।

सूर्य, चन्द्र,मंगल वुध गुरू शुक,शनि, इस प्रकार 7 मे से एक एक ग्रह अगर,वाहर रहेगा तो, 3456 गुणे 7= 24192 प्रकार का काल सर्प दोश होता है।।
लक्षण– साप दीखना,वच्चो का विस्तर गिला कर देना,संतान कष्ट,गृह कलह, मानसिक अशांन्ति,असफलता, जलना, डरावने स्वप्न,गिरना, दुःखी होना,धोखामिलना,इत्यादि।।

अन्य योग

कुछ योग ऐसे है, जो योग होने के वाद फिर काल सर्प दोश कम हो जाता है,या नही लगता,वो निम्नलिखित हैं।

1 सभी ग्रह सप्तम भाव से लग्न तक होतो छत्र योग वनता है।
2 सभी ग्रह लग्न से सप्तम तक होतो नौका योग वनता है।
3 सभी ग्रह चतुर्थ से दशम भाव तक हो तो कूट योग होता है।
4 सभी दशम भाव से चतुर्थ तक होतो सर्प योग होता है।

कुछ योग ऐसे होते है जो होने के वाद काल सर्प और भंयकर हो जाता है–

1 राहू+सूर्य ग्रहण योग होता है
2 राहू+ चन्द्र ग्रहण योग वनता है।
3 राहू+मंगल अंगाकारक योग वनाता है।
4 राहू+वुध जड़त्व योग वनाता है
5 राहू+गुरू चाण्डाल योग वनाता है।
6 राहू+शुक्र अभोत्वक योग वनाति है।
7 राहू+शनि नंदी योग वनाति है

इसी प्रकार अन्य योग भी है–

1 **अष्ट लक्ष्मी योग**– षष्ठ मे चन्द्र केन्द्र मे गुरू मे होने से वनता है। इसका प्रभाव शुभ होता है।
2 **कपट योग**–चतुर्थ मे शनि, द्वादश भाव मे राहू होने से कपटी होता है।
3 **क्रोध योग**– जन्म कुण्डली,के लग्न मे राहू केतु या राहू+सूर्य,या वुध या शुक्र के साथ होतो क्रोधी होता है।
4 **/पिशाच ग्रस्त योग**–लग्न मे चन्द्र मे राहू होने से और लग्न एवं 5,9,12 भाव मे होने से या मंगल या शनि भी होतो उसे प्रेतिक वाधा वनी रहती है।
5 चतुर्थ मे राहू मंगल होने वास्तु दोश होता है।।
6 **सर्पदशं योग**– अष्टम भाव मे राहू और पाप ग्रह होतो जहर के द्वारा मारा जाता है।

विद्या पड़ाई देखना
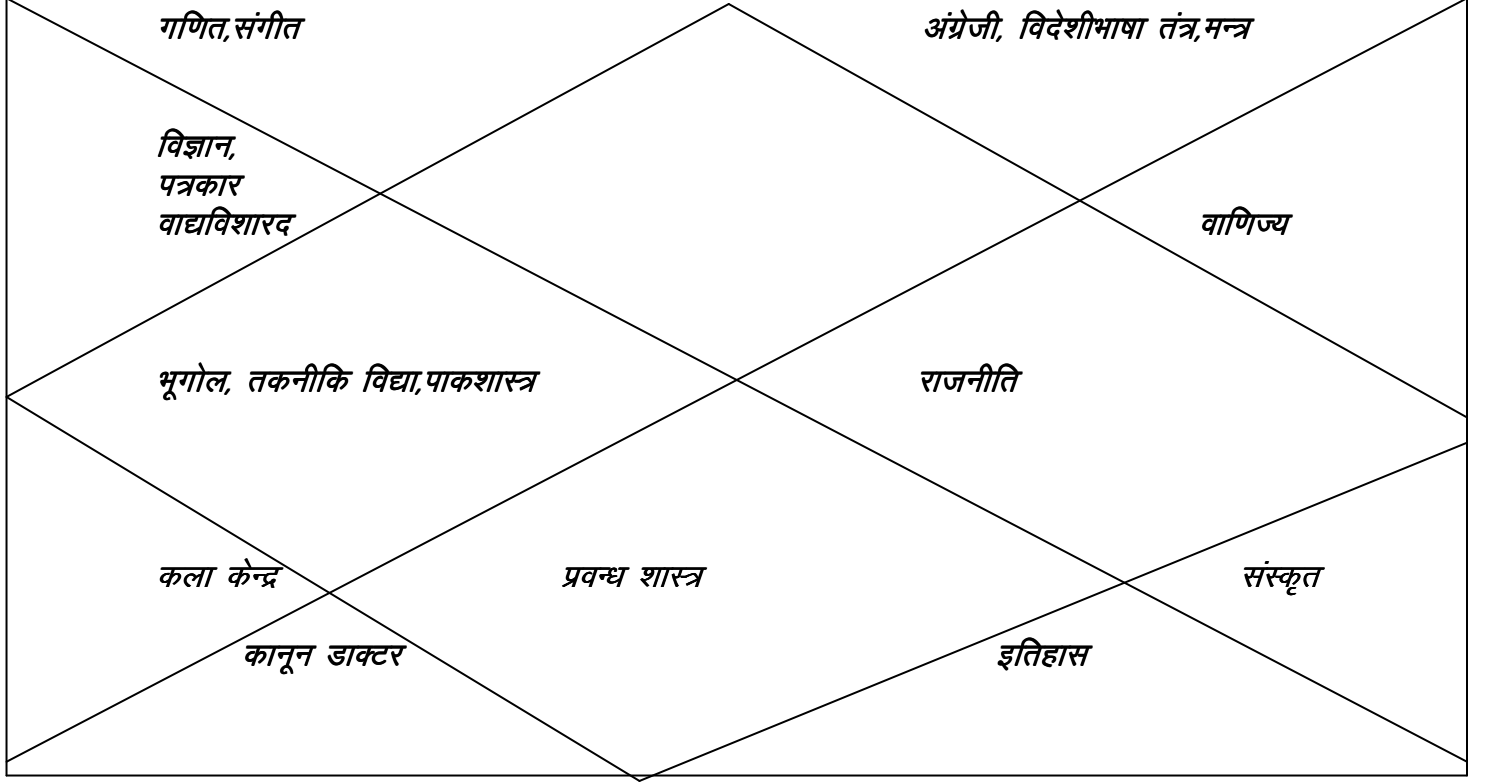
1 पंचम का स्वामि
2 पंचम मे ग्रह
3 पंचम मे दृष्टी
4 दशमेश

स्वप्न शुभाशुभ विचार

शुभ स्वप्न विचार–

चिन्ता व्याधि समायुक्तो नर स्वप्नंच पश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्वेन न शंसयः।

स्वप्न	फल
आकाश कि ओर जाना	*लम्वी यात्रा*
सूर्य कों देखना	*महात्मा दर्शन*
वादल देखना	*तरक्की*
घोड़े पर चड़ना	*व्यापार मे उन्नति*
शीशे मे मुह देखना	*स्त्री से प्रेम*
उचे से गिरना	*हानि*
वाग फुलवारी देखना	*खुशी*
सर के कटे वाल देखना	*कर्ज से छुटकारा*
पाखाना देखना	*धन प्राप्ती*
फूल देखना	*प्रेमी मिले*
परीक्षा मे फेल होना	*सफल होना*
जलती आग देखना	*समस्या पर विजय*
जलता दीपक देखना	*आशा पूरी करता है*
आग वुझाते देखना	*रिश्ते टूटना*
घर मे आग लगी देखना	*कार्य पूर्ति सूचक*
धूऑ देखना	*महा अशुभ*
उट देखे	*लाभ होना*
दात उखड़ना	*प्रेम होना*
पर्दा लगा देखना	*अप्रिय जन का मिलना*
वाहन चलाना	*कोई अवसर मिलना*
मिटट्ी खोदना	*शुभ*
खोई वस्तु देखना	*प्रेमी मिलना*
गाय मोर मधुमक्खी देखना	*समृद्धि देखना*
घड़ी देखना	*काम का व्यर्थ देखना*
खरहा साड़ घोडादेखना(गिरना	*शुभ(अशुभ*
कौआ देखना! उड़ाना	*महा अशुभ! शुभ*
शेर देखना	*शत्रु भय*
झण्डा देखना	*विजय का प्रतीक*
ढोल वजाना	*सफलता का मिलना, यात्रा*
वन्द ताला देखना	*काम वन्द होना*
वूड़े लोग,भीख पाना,यादेना	*शुभ होता है*

दौड़ना किसी के साथ	छल होना
नीलामी देखना,	शुभ

स्वप्न शुभाशुभ विचार

नंगे पाव चलना	विपत्ती मे पड़ना
प्रेम, व्यापार,परीक्षा मे फेल होना	शुभ होना
वादल देखना	चिन्ता होना
तोता देखना	चुगली करना
पिजड़े मे वन्द देखना	केश मे फसना
वाद्य देखना	शुभ
वाद्य वजाना	अशुभ
भोजन पकाना	शुभ समाचार पाना
मन्दिर मूर्ति देखना	शुभ है
अत्यन्त वृद्ध काली स्त्री देखना	अशुभ
विधवा खुली केश लाल वस्त्र	मृत्यु सूचक
निर्वस्त्र मनुष्य देखना	मृत्यु देखना
हाथ से दर्पण गिरना	स्नेहीयो की मृत्यु

मार्जार सकेंत

सोते समय विल्ली का गिरना या चाटा मारना तो इससे 6मास तक जीवे । अंगुलिया चटकाने पर भी ना चटके तो मृत्यु निकट आइ समझना। मस्तक की तीनो रेखाये नष्ट हो जाय तो 3 माह मे मृत्यु। दीपक वुझने पर उसकी गन्ध का अनुभव ना होना। भौहो के वीच मे कलाई रखने पर कलाई पतली दिखाई देती है किन्तु जव टूटी हूइ दिखाई दे तव 6 मास के अन्दर मरने का योग होता है।।

ग्रह दोंश स्नान औषधी

लाजवन्ती, कूट, खिल्ला, कांगनी, जौ सरसो, देवदारू, हल्दी, लोध, जटामासी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन वच, चम्पक, और नागर मोथा, इनको मिला कर स्नान करने से ग्रह पीडा विल्कुल समाप्त हो जाती है।

अमृतं सिद्धियोगश्च यद्येकस्मिन्नदिने भवेत्।
तद्दिनं तु भवेत दुष्टं मधुसर्पि यथा विषम।। ज्योतिष तत्वं
अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतो भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सिर्द्धयोगः प्रवर्तते।। राज र्मातण्ड
दिवा मृत्यु प्रदा पापा दोषाः तु ऐतेन रात्रिषु।।
भौम अश्वनी प्रवेशे च प्रयाणे शनि रोहणीम।
गुरू पुष्यं विवाहे च सर्वथा परिवर्ज येत।।
सि़द्धान्त सहिंता रूपं होरा स्कन्धः त्र्यात्मकम। ज्योतिष मे 3 भाग सिद्धान्त होरा, संहिंता
वेदस्य र्निमलम चक्षु ज्योतिश शास्त्रमनुत्तमम।।
भूकम्प अयन आदिसिद्धान्त तिथि नक्षत्र संहिता, होरा–कुण्डली
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तत्र केवलम।
प्रत्यक्षं ज्योतिशं शास्त्रं चन्द्राकौ तत्र साक्षिणौ।। ज्योतिश शास्त्र हि प्रत्यक्ष शास्त्र है वाकि विवाद वाले
यथा सिद्धौषधैः रोगान्नश्येयुः मन्त्रतोथवा ।
तथा स्नान विधानेन ग्रह दोशा प्रणश्यति।।

	मेष	चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ
	वृष	ई, उ, ए, औ, द, दी, वू, वे, वो
	मिथुन	क, की, कु, घ, ड़, छ, के, को, ह
	कर्क	ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
	सिंह	म, मी, मे, मो, टा, टी, टू, टे
	कन्या	टो, पी, पू, प, ष, ण, ठ, पे, पो
	तुला	रा, री रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते
	वृश्चिक	लो, ना, नी, ने, नू, या, यी, यू
	धनु	ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे
	मकर	भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, ग, गी
	कुंभ	गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द
	मीन	दी, दू, दे, दो, चा, ची, झ, त्र, ञ
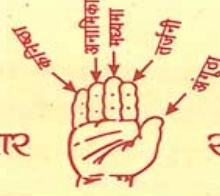
रत्न चिकित्सा पद्धति के अनुसार रत्न व उपरत्न धारण करने के लाभ

1.	अत्यधिक चक्कर आने पर	नीलम	मध्यमा अंगूली में
2.	पेट की तकलीफ होने पर	मोती	अनामिका या कनिष्ठा अंगूली में
3.	बार–बार छाले होने पर	पन्ना	अनामिका या कनिष्ठा अंगूली में
4.	अलर्जी होने पर	लहसुनियाँ व गौमेद	दोनों मध्यमा अंगूली में
5.	खून की अत्यधिक कमी होने पर (अनैमिक)	पुखराज व मूंगा	तर्जनी व अनामिका
6.	अपैण्डिक्स का दर्द होने पर	लाल मूंगा या पुखराज	अनामिका व तर्जनी
7.	हड्डियों से सम्बन्धित तकलीफ होने पर	मूंगा पन्ना व नीलम	अनामिका या कनिष्ठा व मध्यमा
8.	अस्थमा होने पर	लहसुनियाँ, पन्ना, पुखराज व मोती	मध्यमा, अनामिका, तर्जनी व कनिष्ठा
9.	हाईपर टेन्शन होने पर	गारनेट या माणक व नीलम	अनामिका व मध्यमा
10.	ब्लैडर में तकलीफ होने पर	मूंगा व पुखराज	अनामिका व तर्जनी
11.	शारीरिक दर्द होने पर	माणक व नीलम	अनामिका व मध्यमा
12.	ब्रेन ट्यूमर होने पर	पन्ना (ताम्बे में), मूंगा व पुखराज	कनिष्ठा, अनामिका व तर्जनी
13.	ब्रेस्ट केन्सर	मूंगा (ताम्बे में), पन्ना व नीलम	अनामिका, कनिष्ठा व मध्यमा
14.	केन्सर होने पर	गौमेद (ताम्बे में) व लहसुनियाँ	दोनो मध्यमा
15.	डिप्रेशन होने पर (अवसाद)	पन्ना व मोती	कनिष्ठा व अनामिका
16.	अपच होने पर	पन्ना	कनिष्ठा या अनामिका
17.	आँखों की तकलीफ होने पर (दृष्टि दोष)	माणक	अनामिका
18.	थाइराईट होने पर	पुखराज	तर्जनी
19.	एक्जीमा हो जाने पर	सफेद मूंगा व पुखराज	अनामिका व तर्जनी
20.	बुखार होने पर	मोती	अनामिका या कनिष्ठा
21.	अत्यधिक गैस की तकलीफ होने पर	पन्ना	अनामिका या कनिष्ठा
22.	दिमाग में हैडक होने पर	नीलम व फिरोजा	मध्यमा व अनामिका
23.	हरर्णियां हो जाने पर	मूंगा (ताम्बें में) पुखराज	अनामिका व तर्जनी
24.	अत्यधिक अम्ल बनने पर (ऐसीडीटी)	पन्ना	अनामिका व कनिष्ठा
25.	हिस्टीरिया के दौरे पडने पर	मूंगा व पुखराज	अनामिका या तर्जनी
26.	लीवर में सूजन आ जाने पर	पन्ना	अनामिका या कनिष्ठा
27.	नींद में कमी हो जाने पर	मोती, पन्ना व पुखराज	अनामिका, कनिष्ठा व तर्जनी
28.	पीलिया हो जाने पर	पुखराज (सोने में)	तर्जनी
29.	कोढ़ (लैप्रेसी) हो जाने पर	माणक (ताम्बे में)	अनामिका
30.	माइग्रेन के दर्द में	पुखराज व मोती	तर्जनी व अनामिका या कनिष्ठा
31.	कान से अत्यधिक मवाद आने पर	माणक	अनामिका
32.	लकवा हो जाने पर	कटहैला या पन्ना व नीलम या मूंगा व पन्ना	**मध्यमा/कनिष्ठा व मध्यमा/अनामिका व कनिष्ठा**
33.	बार–बार गर्भ के गिरने पर	मूंगा	अनामिका
34.	माहवारीमें परेशानी होने पर	कटहैला व मोती	मध्यमा व अनामिका या कनिष्ठा
35.	किडनी की बिमारी के लिये	किडनी स्टोन	अनामिका
36.	बवासीर हो जाने पर	माहेमारियम	अनामिका
37.	शराब छुडवाने हेतु	कटहैला	मध्यमा
38.	केवल कल्पनाओं में ही खोये रहने पर	पन्ना	अनामिका या कनिष्ठा
39.	व्यापार में वृद्धि हेतु	पन्ना	अनामिका
40.	व्यापार में बार–बार नुकसान होने पर	गौमेद	तर्जनी में
41.	स्वास्थ्य में लगातार गिरावट होने पर	लहसुनियाँ	तर्जनी में
42.	विदेश यात्रा अथवा विदेशों से आय के लिये	मोती	अनामिका
43.	महिलाओं के स्वास्थ्य में गिरावट होने पर	मोती	अनामिका

रत्न धारण करने की विधियाँ

सूर्य (माणिक)

ॐ घृणिः सूर्याय नमः ।।
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।।

माणिक : माणिक्य रविवार, सोमवार या बृस्पतिवार को खरीदकर सोने की अंगूठी में जड़वाएं। फिर शुक्लपक्ष के किसी रविवार के दिन सूर्योदय के समय पहनना चाहिए। धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। साथ ही 108 बार ॐ घृणिः सूर्याय नमः मंत्र का जप करना चाहिए। इसे दाएं हाथ की तर्जनी उंगली में पहनें।

चंद्र (मोती)

ॐ सों सोमाय नमः ।।
ॐ श्रा श्रीं श्रौं सः चन्द्रायनमः ।।

मोती : मोती चांदी की अंगूठी में पहनना चाहिए। इसे सोमवार या बृहस्पतिवार को खरीदना व मढ़वाना चाहिए। फिर किसी शुक्ल पक्ष के सोमवार को धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। 108 बार ॐ सों सोमायः नमः मंत्र का जप करके संध्या के समय धारण करना चाहिए।

मंगल (मूँगा)

ॐ अं अंगारकाय नमः ।।
ॐ कां कीं कौं सः भौमाय नमः ।।

मूंगा : मूंगा यथासंभव सोने की अंगूठी में जड़वाया जाना चाहिए। यदि धारक के लिए सोना खरीदना संभव न हो तो चांदी में थोड़ा सोना मिलाकर या तांबे की अंगूठी बनावाकर मूंगा धारण करना चाहिए। धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। यदि मंगलवार को मूंगा खरीदकर उसी दिन अंगूठी में जड़वाया जाए तो उत्तम है। 108 बार ॐ अं अंगारकाय नमः मंत्र का जप करके किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद दाएं हाथ की अनामिका उंगली में धारण करना चाहिएं।

बुध (पन्ना)

ॐ बुं बुधाय नमः ।।
ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधायनमः ।।

पन्ना : जहां तक संभव हो, पन्ना बुधवार को चांदी की अंगूठी में जड़वाना चाहिए। धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। इसे ॐ बुं बुधाय नमः मंत्र को 108 बार जप करके किसी शुक्ल पक्ष के बुधवार को सूर्योदय के दो घंटे बाद धारण करना चाहिए। वैसे पन्ना सोने की अंगूठी में भी पहनने का प्रचलन है, लेकिन यह चांदी की अंगूठी में ही लाभकारी सिद्ध होता है। इसे दाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली में पहनना चाहिए।

गुरू (पुखराज)

ॐ बृं बृहस्पतये नमः ।।
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरूवे नमः ।।

पुखराज : पुखराज को सोने की अंगूठी में ही धारण करें, बेहतर यह होगा कि सात या बारह रत्ती का पुखराज पहनें। इसे बृहस्पतिवार को ही अगूंठी में जड़वाना चाहिए। धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। इसे ॐ बृं बृहस्पतये नमः मंत्र का 108 बार जप करके किसी शुक्ल पक्ष के गुरूवार को सूर्यास्त से एक घंटा पहले तर्जनी उंगली में धारण करना चाहिए।

शुक्र (हीरा)

ॐ शुं शुकाय नमः ।।
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुकाय नमः ।।

हीरा : हीरा अत्यंत ही कीमती रत्न है। बहुत कीमती होता है। इसलिए इसके वजन के बारे में बताना उचित नहीं लगता। फिर भी ज्योतिषियों के अनुसार, हीरा 25 सैंट से लेकर डेढ़ रत्ती तक धारण किया जा सकता है। जिस व्यक्ति की जितनी सामर्थ्य हो, वह उतने वजन का हीरा धारण कर सकता है। हीरे को प्लेटिनम या चांदी की अंगूठी में मढ़वाना चाहिए। इसे शुक्रवार को ही बनवाना उत्तम होता है। धारण करने से पूर्व इसे कच्चे दूध या गंगाजल में डूबोकर रखना चाहिए। तदुपरांत पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद एवं गंगाजल) से स्नान कराकर पुष्प, चंदन और धूपबत्ती से उसकी उपासना करनी चाहिए। ॐ शुं शुक्राय नमः मंत्र का 108 बार जप करके किसी शुक्लपक्ष के शुक्रवार को प्रातः काल श्रद्धा के साथ धारण करना चाहिए।

सप्तमेश या सप्तम भाव से इसका

नीलम,गोमेद,
लहसुनिया,हीरा
माणिक,मूंगा
पुखराज
मध्यमा
अनामिका
तर्जनी
लहसुनिया,
पन्ना,मोती
कनिष्ठा
अगुष्ठ
६ १ ८
७ ५ ३
२ ९ ४
बुध (पन्ना)
ॐ बुं बुधाय नमः॥
ॐ बां बीं बौं सः बुधायनमः॥
११ ६ १३
१२ १० ८
७ १४ ९
शुक्र (हीरा)
ॐ शुं शुकाय नमः॥
ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुकाय नमः॥
८ १ ६
३ ५ ७
४ ९ २
चन्द्र (मोती)
ॐ सों सोमाय नमः॥
ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रायनमः॥
६ १ ८
७ ५ ३
२ ९ ४
गुरु (पुखराज)
ॐ बृं बृहस्पतये नमः॥
ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः॥
४ ३ ८
९ ५ १
२ ७ ६
सूर्य (माणिक)
ॐ घृणिः सूर्याय नमः॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः॥
६ १ ८
७ ५ ३
२ ९ ४
मंगल (मूंगा)
ॐ अं अंगारकाय नमः॥
ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः॥
२ ९ ४
७ ५ ३
६ १ ८
केतु (लहसुननिया)
ॐ कें केतवे नमः॥
ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः॥
८ ३ ४
१ ५ ९
६ ७ २
शनि (नीलम)
ॐ शं शनैश्चराय नमः॥
ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः॥
६ ७ २
१ ५ ९
८ ३ ४
राहू (गोमेद)
ॐ रां राहवे नमः॥ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सःराहवे नमः॥

Yellow Sapphire
(Pukhraj)
Blue Sapphire
(Neelam)
Hessonite
(Gomedh)
Cat's Eye
(Lahasunya)
Diamond
(Heera)
Red Coral
(Moonga)
Ruby
(Manik)
Emerald
(Panna)
Pearl
(Moti)
Diamond
Emerald
Pearl
Yellow Sapphire
Ruby
Red Corel
Cat's Eye
Hessonite
Blue Sapphire
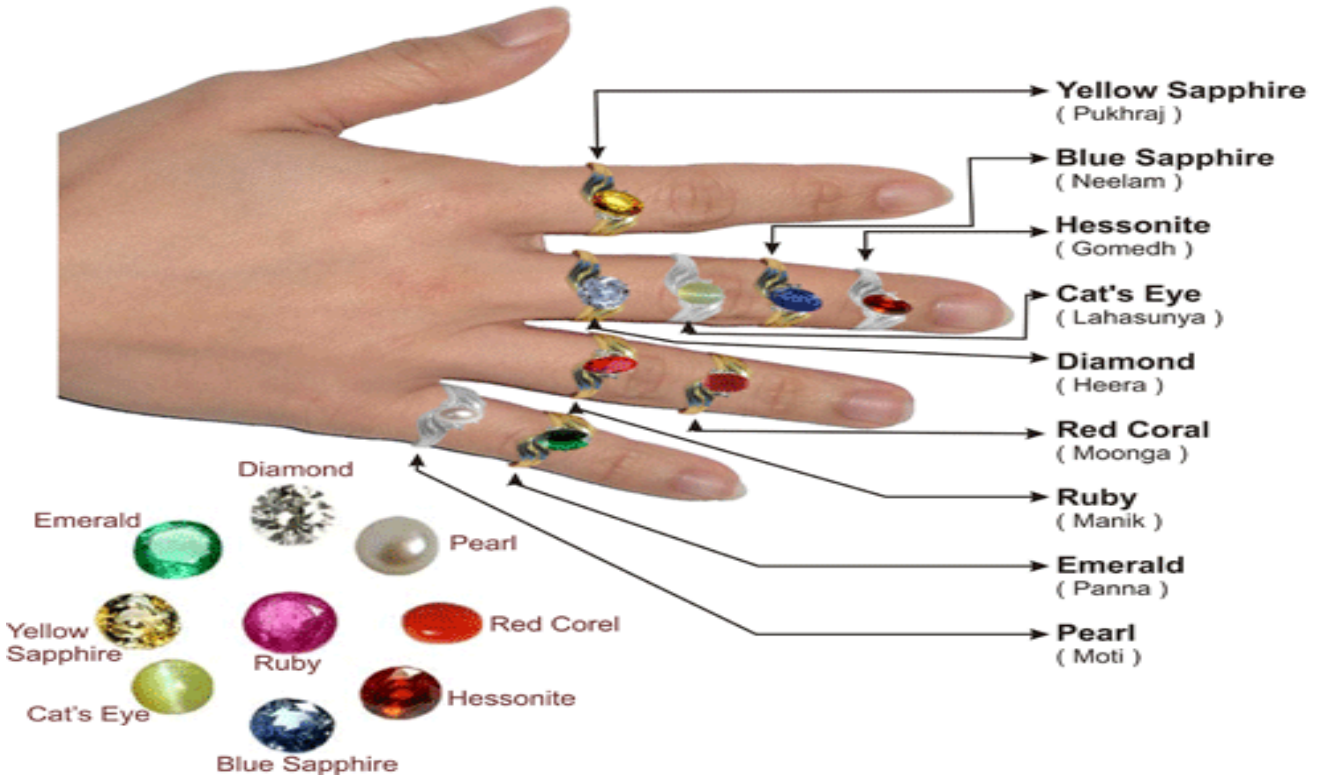
विविध संकल्प सिद्धि के लिए श्रीमद्भागवत के विविध सिद्ध मंत्रो का प्रयोग

(प्रत्येक मंत्र का तुलसी की माला में ग्यारह माला का जाप करें।)

विद्या प्राप्ति के लिए

मा शारदे नमस्तुभ्यं काश्मीरपुरवासिनी।
त्वामंह प्रार्थये नित्यं विद्या दानंच देहि में।।

अथवा

ॐ श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

वर प्राप्ति के लिए

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरू ते नमः।।
भाग 10 |22 |4

पुत्र प्राप्ति के लिए

देवकिसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।

स्थिर लक्ष्मी के लिए

ततश्चाविरभूत् साक्षाच्छ्री रमा भगवत्परा।
रंजयन्तीं दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामनी यथा।।

भोजन पाचन मंत्र

शर्यातिं च सुकन्यां च, च्यवनं शक्रमशिनौ।
भोजनान्ते रेद्यस्तु, चक्षुस्तस्य न ह्रीयते।।

शीध्र विवाह के लिए

पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिंणी दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भवाम्

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

तत आरभ्य नन्दस्य ब्रजः सर्वसमृद्धिमान्।
हरेर्निवासत्मगुणैः रमाकीडमभुन्नृप।।
भाग 10 |5 |18

संकट निवृति के लिए

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

रोग निवृत्ति के लिए

धन्वतरिर्दैर्घतम आयुर्वेद प्रवर्तकः।
यज्ञभुक् वासुदेवांशः स्मृतमात्रार्तिनाशनः।।

भगवत्प्राप्ति के लिए

हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि–क्वासि महाभुज।
दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम्।।
भाग 10 |30 |40

"ज्योतिषशास्त्र के अचूक उपाय"

संसार में ऐसे बहुत से लोग है जिनको अपने जन्म समय, जन्म तारीख और जन्म स्थान के बारे में पता नहीं है और उन्होंने न ही अपनी जन्म कुण्डली बनवाई है। ऐसी स्थिति में "ज्योतिष विद्या" मानव जीवन की अनेक समस्याओं को हल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस के उपायों द्वारा आप बड़े अद्‌भुत और अचूक परिणाम प्राप्त कर सकते है। नीचे दिये गए विषय अनुसार अपनी समस्या का चयन कीजिए और ज्योतिष शास्त्र के उपायों के द्वारा अपने जीवन को सुखमय और खुशहाल बनाये :-

"धन प्राप्ति के उपाय"

- नमक को कभी भी खुले बरतन में न रखें।
- प्रतिदिन पीपल की जड़ में जल डालें।
- अपने घर के प्रत्येक दरवाजों के कब्जों में तेल लगायें ताकि किसी भी दरवाजे से चूँ-चूँ की आवाज न आये।
- भोजन तैयार करते समय पहली रोटी गाय के लिए निकालें और अन्तिम् रोटी कुत्ते के लिए निकालें।
- जब भी आप अपनी बहन या बुआ को घर पर आमन्त्रित करें तो उसे खाली हाथ न भेजे।
- जब भी आप घर के फर्श साफ करें तो उस पानी में थोड़ा सा नमक मिला ले।

"धन के ठहराव के लिए उपाय"

- जब भी आप नोटों की गिनती करें तो कभी भी अँगूली पर थूक लगाकर गिनती न करें।
- कभी भी सुर्यास्त उपरान्त घर में झाडू न लगाये।
- बुधवार के दिन किसी भी किन्नर को हैसियत अनुसार कुछ धन दान देकर उससे कुछ पैसे वापस ले लें।
- बुधवार को किसी को भी पैसे उधार न दें।

"शीघ्र विवाह हेतु उपाय"

- हमेशा अपने से बड़े व्यक्तियों और बुजुर्गो का सम्मान करें।
- जब भी आप स्नान करें तो उस पानी में थोड़ा सा हल्दी पाउडर मिला लें।
- अपने घर में खरगोश पालें और प्रत्येक बुधवार उसे हरी घास खाने को दे।
- नव-विवाहित व्यक्ति के पुराने वस्त्रों का उपयोग करें।
- देवगुरु बृहस्पति का पूजन करें।
- जब कभी भी अपने माता-पिता आपके लिए वर देखने जाये उस दिन लाल वस्त्र पहने और जब तक वें वापस न आ जाये अपने बालों को खुला रखें।
- रात को सोने से पूर्व अपने सिर के पास आठ खजूर रखे और प्रातःकाल उसे चलते पानी में बहा दें।
- शनिवार की रात्रि में चौराहे पर नया ताला व चाभी रखें।

"सुखी विवाहित जीवन के लिए उपाय"

- अपने जीवन साथी को कम आमदन के लिए कभी भी तानें न मारें।
- प्रतिदिन प्रातः केले और पीपल के पेड़ का पूजन करें।
- हमेशा अपना मासिक वेतन अपनी पत्नी को दें और उसे कहें कि इसे उपयोग करने से पूर्व एक बार तिजोरी में रखलें
- हमेशा अपनी पत्नी का सम्मान "लक्ष्मी" की भांति करें।
- पति के भोजन करने के उपरान्त पत्नी को पति की जूठी थाली में से कुछ भोजन ग्रहण करना चाहिए।

"बच्चों की शिक्षा सम्बन्धी कुछ अचूक उपाय"

- बच्चों को 11 तुलसी पत्र के रस में मिश्री मिलाकर दें इससे उनकी एकाग्रता में अद्‌भुत वृद्धि होगी।
- प्रतिदिन सूर्य को जल देवें।
- प्रतिदिन 21 बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण करें।
- विद्यार्थी अपने अध्ययनकक्ष में विद्या की देवी सरस्वती का चित्र लगायें।
- इमली की 22 पत्तियाँ लें उनमें से 11 पत्तियां सूर्यदेव को अर्पित कर दें और बाकी अपनी पुस्तक में रखें।
- रात्रि सोने से पूर्व 11 बार **"ॐ ऐं सरस्वते नमः"** मन्त्र का उच्चारण करें।
- अपने अध्ययन कक्ष में हरे रंग के पर्दे लगाये।

"स्वयं में आत्मविश्वास उत्पन्न करने के उपाय"

- रविवार को लाल रंग के बैल को गुड़ खिलायें।
- अपने घर के मन्दिर में लाल रंग के बैल का खिलौना रखें।
- प्रतिदिन अपने दाँत फिटकरी पाउडर से साफ़ करें।
- शक्कर मिश्रित जल भगवान सूर्य को चढ़ावें।

"रोगों से शीघ्र छुटकारा पाने हेतु उपाय"

- दवाइयाँ आरम्भ करने से पूर्व उसे थोड़े समय के लिए शिव मन्दिर में रखें।
- अपनी शयन करने की चारपाई के चारों पावों में चाँदी की कील लगाऐ।
- जब भी जल पियें उसमें गंगा जल मिश्रित करके पियें।
- प्रतिदिन प्रातः हनुमान चालीसा और बजरंग बाण पढ़े।
- अपने बुरे कर्मो के लिए परमात्मा से क्षमा याचना करें।

"व्यवसाय में वृद्धि हेतु उपचार"

- एक लाल रंग के नये कपड़े में थोड़ा सा लाल चन्दन पाउडर बाँधे और उसे अपनी तिजौरी में रखें।
- अपने व्यवसाय में अपनी पत्नी को हिस्सेदार बनायें।
- आप अपने पहले ग्राहक से जो भी धन राशि कमाते हो उसमें से कुछ राशि किसी जरुरतमन्द को प्रतिदिन दान करें।
- प्रातः जब आप अपने घर से व्यवसाय वाले स्थान पर जाते हो तो रास्ते में कहीं न रुके, सीधे व्यवसाय स्थान पर जायें।

"नौकरी प्राप्त करने हेतु उपाय"

- **"ॐ श्री श्री क्रीं ग्लो गं गणपतये वर वरदाय मम नमः"** इस मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करें।
- जब भी आप रोजगार हेतु साक्षात्कार के लिए जाये तो जाने से पूर्व एक चम्मच दही-शक्कर खाकर जायें।
- जब साक्षात्कार के लिए निकले तो घर से पहले दाहिना पैर बाहर निकाले और अपने परिवार के सदस्य से अपने ऊपर से कुछ साबुत मूँग घुमाकर बाहर फैंकने के लिए कहें।
- जब भी आप साक्षात्कार के लिए जायें तो आपके रास्ते में जो भी प्रथम मन्दिर आये वहाँ पर नारियल चढ़ावें।
- शीघ्र नौकरी पाने के लिए शनि से सम्बन्धित उपाय करें।

"कर्ज से छुटकारा पाने हेतु उपाय"

- अपने घर और व्यवसाय स्थान पर "मध्य का स्थान" खाली और साफ रखें।
- अपने घर में खराब हुई वस्तुएं जैसे बिजली का खराब समान, खराब घड़ीया और अन्य खराब सामान न रखें।
- अपने ऋण के बारे में बार-बार बात न करें।
- अपने घर के गन्दे जल का निकास उत्तर-पूर्व की ओर रखें।
- अपने कर्मचारियों का ध्यान रखें और सम्मान करें।
- रविवार को प्रातः नदी में नारियल विसर्जित करें।

मित्र राशियाँ

जब ग्रह अपनी किसी मित्रराशि को ग्रहण कतरे हैं, उस स्थिति में ग्रह अपने आप को परिणाम देने में अत्यधिक स्वतंत्र व समर्थ पात हैं। परन्तु ग्रह प्रबल अवस्था मे होने चाहिए। सूर्य, चंद्र, मंगल मित्र ग्रह हैं तथा गुरू उसका सम हैं। शनि, बुध, राहू तथा केतू मित्र ग्रह हैं तथा शुक्र उनका सम है।

शत्रु राशियाँ

जब ग्रह अपनी किसी शत्रु राशि को ग्रहण करते हैं तब ऐसी स्थिति में ग्रह अपने आप को अपनी सामर्थ्यनुसार फल देने में कठिनाई अनुभव करते है। परन्तु यदि कोई ग्रह अपनी शत्रु राशि में स्थित होकर अपनी मूल त्रिकोण राशि पर दृष्टि डालता है तो ऐसी अवस्था में यह नियम लागू नही होता तथा ग्रह फल देने में अपने आप को सीमित नही करते है।

विभिन्न ग्रहों की मूल त्रिकोण राशियाँ निम्न रूप से है।

ग्रह	मूल त्रिकोण राशि
सूर्य	सिंह
चन्द्रमा	कर्क
मंगल	मेष
बुध	कन्या
बृहस्पति	धनु
शुक्र	तुला
शनि	कुम्भ

ग्रहों की स्थिति की गणना हम ज्यातिर्विज्ञान के नियमों की सहायता से करते है।

भावों की प्रकृति

केन्द्र तथा त्रिकोण शुभ भाव है। दुस्थान अशुभ भाव है। तटस्थ भावों पर भी शुभ भाव जैसा ही विचार करना चाहिए।

तटस्थ भाव अपने योगदान से आश्चर्य जनक व सकारात्मक परिणाम प्रदान करते है।

लग्न से षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश अशुभ भाव कहलाते है। इन भावों के अतिरिक्त अन्य सभी भाव शुभ भाव कहलाते है।

लग्न	क्रियात्मक अशुभ ग्रह
मेष	बुध
वृषभ	मंगल, शुक्र एवं गुरू
मिथुन	कोई भी नहीं
कर्क	गुरू और शनि
सिंह	चन्द्रमा
कन्या	सूर्य, शनि एवं मंगल
वृश्चिक	शुक्र एवं मंगल
धनु	चन्द्रमा
मकर	सूर्य एवं गुरू
कुम्भ	चन्द्र एवं बुध
मीन	सूर्य, शुक्र एवं शनि

गृह एवं उनके स्थान अथवा भाव तथा उनके प्रभाव :

गुरु - द्विवितीय/दुसरे , पंचम, नवम,दशम, एकादस भाव अथवा स्थान - बुध द्विवितीय, पंचम,नवम,एवं एकदास भाव का स्वामी होता है , एवं इससे हम विधा, बुद्दि, बेटी,बेटा, पुस्तक लेखन कार्य, आत्मा, मंत्र-तन्त्र, मंत्री, कर, भविष्य ज्ञान,श्रुति,स्मृति, शास्त्र ज्ञान, लोटरी, पेट, गर्भ, संतान, धन-धान्य, सौना-चांदी, संपत्ति, कुटुंब-कबीला, वाणी,विधा, चेहरा, खान पान, भोजन पत्रिका, दाहिना नेत्र, रत्न, समुद्र यात्रा, गुरु-आचार्य, साला-साली, तीर्थ-यात्रा, भाई की पत्नी, जीजा, दोहता-दोहती, पौत्र-पौत्री ,भाग्य धर्म , आवक, लाभ,प्रशंसा, बड़ा, भाई, पुत्र वधु, बाँयां कानबाँयां बाजु, व्यापार में लाभ-हानि, दामाद, पिता, राज्य, हुकूमत, पद प्राप्ति, पदोन्नति, कर्म व्यापार, ट्रान्सफर, पूर्व जन्म, सास आदि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है ।

स्थिर कारक - धर्म, ब्राहमण, देवता, पुत्र, मित्र, कार्य, यज्ञ आदि कर्म, सोना, पालकी,इत्यादि ।

गुरु ज्ञान, सुख एवं कफ का अधिष्ठाता एवं कारक है |गुरु पुरुष एवं शुभ गृह है, तथा गुरु, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा-भाद्रपद नक्षत्रों में बलवान होता है | गुरु हमारे शरीर में चर्बी व् नासा/नाक के मध्य के क्षेत्र पर अधिकार होता है तथा यह १६वे, २२वे, ४०वे, वर्ष में ज्यादा प्रभावी होता है |

शुक्र - सप्तम भाव अथवा स्थान - शुक्र सप्तम भाव का स्वामी होता है, एवं इससे हम साझेदारी, यात्रा, पति-पत्नी, व्यापार,लौटरी, एवं दुसरे बच्चे के गर्भ धारण की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है | **स्थिर कारक -** यौवन, सुन्दरता, ऐश्वर्य, आभूषण, पत्नी, अन्य स्त्री, काम-शास्त्र, सुकुमारता, काव्य, नर्त्य -गान, सिनेमा, टीवी, इत्यादि |

शुक्र काम एवं वात-कफ का अधिष्ठाता व् कारक होता है | शुक्र स्त्री एवं शुभ गृह है, तथा शुक्र, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा नक्षत्रों में बलवान होता है | शुक्र हमारे शरीर में वीर्य, नेत्रों तथा पैर पर अधिकार व् प्रभावी होता है तथा शुक्र २५ से २८ वर्ष की उम्र में ज्यादा प्रभावी होता है |

शनि - छटवे, आठवें, द्वादश/बारहवें, एवं मतानुसार दशम भाव अथवा स्थान - शनि छटवे, अष्टम, द्वादश/बारहवें, एवं मतानुसार दशम भाव अथवा स्थान का स्वामी होता है, एवं इससे हम रोग, शत्रु, सौतेली माँ, झगड़े-टंटे, मुक़दमा,कर्जे, पानी से डर, जानवर से भय, मामा-मौसी, स्त्रियों का सौभाग्य, आयु, वसीयत, अनजाना धन प्राप्त होना, मृत्यु, क्लेश, अपवाद, विघ्न, जहर से मृत्यु, कैद, ऊँचाई से गिरना, दास, व्यव, खर्च, जासूसी पुलिस,दुःख, अवसाद, पाप, दरिद्रता, नुकसान, शत्रुता, कैद, शयन-शुख, वाम-नेत्र, पैर, गुप्त शत्रु, निंदक, आदि के बारे में ज्ञान होता है | **स्थिर कारक -** यात्रा, आयु, दास-दासी,वैराग्य, शस्त्र, केश-तेल, भैंस, घोडा, ऊँट, हाथी, शिल्प, नीलम, दुःख, दर्द, रोग, इत्यादि |शनि आयु एवं दुःख का अधिष्ठाता एवं कारक होता है |

1 Lagan, Start,Sunrise. Face, Soul, Birth, Ascendant, Personality, Mind

2 Wealth , Speech Family, left eye Throat

3 Bravery, left ear, Brothers , Sisters

4 Mother , Home, comforts in house , Wealth, Clothes, Big Cars, Comfortable life

5 Brain , Astrology , Studies, child Stomach

6 Disease war, Sin,Fear,Insult Court cases, Enemies,Servants

7 Sexual relations, Business Partner,Import -Export ,Business Partner, Marriage life, In Laws, Private Organs Wife/Husband

8 Death, Mystery, Deep Sciences, Injuries

9 Religion ,Foreign Travel Luck,Holy place

10 Father Work Place, Energy to Work , Success in business, Nature of work , Job

11 Gains, Income , Speculation, Right Ear

12 Losses,Foreign House, Friends Bed Comforts, Right Eye

1.	अश्विनी	चू, चे, चो, ला।
2.	कृत्तिका	आ, इ, उ, ए।
3.	भरणी	ली, लू, ले, लो।
4.	रोहिणी	ओ, वा, वी वू।
5.	मृगशिरा	वे, वो, का की।
6.	आर्द्रा	कू, घ, ङ, छ।
7.	पुनर्वसु	के, को, हा, ही।
8.	पुष्य	हू, हे, हो, डा।
9.	आश्लेषा	डी, डू, डे, डो।
10.	मघा	मा, मी, मू, मे।
11.	पूर्वाफाल्गुनी	यो, टा, टी, टू।
12.	उत्तराफाल्गुनी	टे, टो, पा, पी।
13.	हस्त	पू, ष, ण, ढ।
14.	चित्रा	पे, पो, रा, री।
15.	स्वाति	रू, रे, रो, ता।
16.	विशाखा	तो, तू, ते, तो।
17.	अनुराधा	ना, नी, नू, ने।
18.	ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू।
19.	मूल	ये, यो, या, यी।
20.	पूर्वाषाढ़ा	यू, घा, फा, ढा।
21.	उत्तराषाढ़ा	पू, ये, यो, जा, जी।
22.	श्रवण	खी, खू, खे, खो।
23.	धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे।
24.	शतभिषा	गो, सा, सी, सू।
25.	पूर्वाभाद्रपद	से, सो, दा, दी।
26.	उत्तराभाद्रपद	दू, ध, क्ष, त्र।
27.	रेवती	दे, दो, चा, ची।